स्वर प्रवाह

संगीत में सम का बड़ा समानंद है। नृत्य, गायन और वादन के तालों की चाहे जितनी भी मात्राएं हों, वे सम पर ही सुशोभित होती हैं। ताल वाद्य कचहरी, वाद्यों की जुगलबंदी हो अथवा गायन, वादन और नृत्य का समागम, सभी का एक ही लक्ष्य है- सम पर मिलना। सम जितना सुंदर, सुघड़ और सुखद होगा उतना ही वह सरस और सजीला-गठीला होगा। सम तो संगीत का जैसे मोक्ष है और सब उसे पाना चाहते हैं। सम नहीं तो दम नहीं। कथक नृत्य को ही लें, चाहे तोड़े हों, टुकड़े, चक्कर हों या कोई परण। मात्राओं के मर्यादित खेल पर जब पैर थिरकते हैं तो पद संचालन, भाव-भंगिमाओं पर आधृत हस्त मुद्राओं का आकर्षण, गायक के बोल, तबले की चांटी और पखावज की हथेली की थाप जब सम पर आकर मिलती हैं तो श्रोता भी रसाप्लावित हो वाह-वाह कर उठते हैं।

संगीत में मात्राओं का खेल भी बड़ा निराला है। ताल की ये मात्राएं जैसे गति का माप नहीं बल्कि गोपियां हैं जो सम के आनन्दरूपी कृष्ण को पाना चाहती हैं। तालमयी संगीत एक आनन्दमयी रास की तरह है जिसमें मात्राएं गोपियां और सम कृष्ण है। एक-एक मात्रा अपनी धुरी पर नर्तन और सच्चिदानंद का कीर्तन करती समरूपी कृष्ण को आत्मसात् करती है तो अपने आप में परिपूर्ण हो पूर्णता के आनन्द की अनुभूति कराती है। लगभग इसी प्रकार हमारी कर्मेंद्रियां, ज्ञानेंद्रियां और उनकी तन्मात्राएं भी मनरूपी कृष्ण पर अनुरक्त रहती हैं।

संगीत में एक शब्द और है, वह है उपज। जिसकी जैसी उपज उसका गायन, वादन और नृत्य की भी उतनी ही अधिक सरस निपज। गायन का माधुर्य, नृत्य का लावण्य और वादन का गांभीर्य-चांचल्य सभी उपज की ही परणिति हैं। उपज का यह विस्तार ही अनुभूति के विराट फलक से साक्षात् कराता है। कमोबेश यही स्थिति जीवन की भी है। अनुभूतियों की अनन्त यात्रा कराती यह उपज जब मन को चित्त, वृत्ति, बुद्धि के बीहड़ जंगल से गुजार कर आत्मलोक तक ले जाती है तो सच्चिदानन्द से साक्षात् करा देती है।

भगवान बुद्ध ने कहा था कि न तो वीणा के तारों को इतना कसो कि वे टूट जाएं और न इतना ढीला रखो कि वे स्पंदित ही न हों अर्थात् सम पर रहने से ही वे झंकृत होते हैं। हमारा जीवन संगीत भी सम पर ही तरंगित रहता है। न राग रंजित हों न द्वेष भंजित, न दुख में डूबो न सुख में उड़ो, सदैव सम पर रहो। यह समत्व ही मोक्ष है। जिसके जीवन में यह सम समा गया वह भय-भ्रम से मुक्त होकर मोक्ष को पा गया। आंसु सुख के हों या दुःख के, उसका सम मुस्कान है, दीपक का सम प्रकाश है उसी प्रकार मानव मन का सम परमोज्ज्वल तेजोमय आत्मप्रकाश है। जो इस स्थिति में कथक के ठाठ की तरह स्थिर हो गया, फिर उसे किसी की बाट जोहने की जरूरत नहीं रहती। उसके तो ठाठ ही ठाठ हैं। दीपावली का यह परमोज्ज्वल प्रकाश आपको जीवन मूल्यों का ठाठ प्रदान करे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ-

वेदव्यास